SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

चम्बल संभाग के कक्षा 9वीं में अध्ययनरत शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता एवं संरक्षण का अध्ययन

विजय सिंह, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
विजय सिंह, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 17/07/2020
Revised on : -----
Accepted on : 23/07/2020
Plagiarism : 09% on 18/07/2020

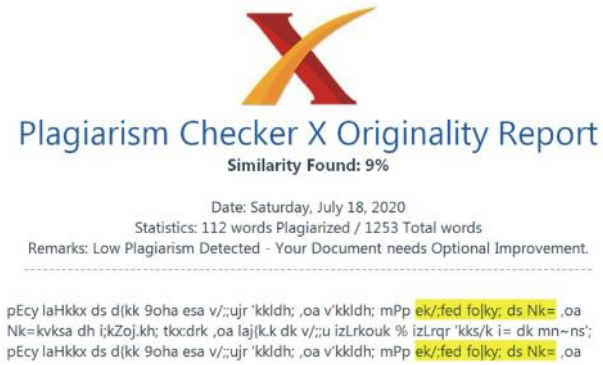

शोध सारांश :

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य चम्बल संभाग के कक्षा 9वीं में अध्ययनरत शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता एवं संरक्षण का अध्ययन करना है।

पर्यावरण इस सृष्टि का मूल जीवन तत्व है। इसकी समृद्धि संसार की समृद्धि है। पृथ्वी पर पाए जाने वाले सभी तत्व, चर–अचर एवं जीव–निर्जीव पर्यावरण की ही देन है।

'पर्यावरण' शब्द समस्त परिस्थितियों की सम्पूर्णता है जो जीवों के जीवन को प्रभावित करती हैं। शोधार्थी जानना चाहता है कि चम्बल संभाग में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता एवं संरक्षण किस प्रकार का है एवं पर्यावरण सहेजने का कार्य वे किस प्रकार कर रहे हैं उनकी पर्यावरण के प्रति जागरूकता प्रभावित हो रही है अथवा नहीं यही सब जानने का प्रयास शोधार्थी ने इस शोध पत्र के अन्तर्गत किया है।

मुख्य शब्द :

पर्यावरणीय जागरूकता एवं संरक्षण।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां प्रत्येक ऋतु आती है। फल–फूलों से भरे उद्यान, हरितमय वातावरण हमारा मन मोह लेता है। परंतु भारत के अधिकांश शहर एवं गांव ऐसे हैं जहां पीने के लिए पानी सहज उपलब्ध नहीं है।

पर्यावरण दो शब्दों ''परि'' और ''आवरण'' से मिलकर बना है। 'परि' का अर्थ होता है 'चारों ओर' तथा 'आवरण' का अर्थ है 'लबादा' या 'घेरने वाला'। इस प्रकार पर्यावरण का सरल शाब्दिक अर्थ हुआ चारों ओर से घेरने वाला।

हमारे चारों ओर जो कुछ भी उपस्थित है वह सब कुछ हमारा पर्यावरण है।

आबादी की वृद्धि के साथ–साथ मानव की दैनिक आवश्यकताएँ भी लगातार विकसित होती गयीं और उनको पूरा करने हेतु वह प्राकृतिक पर्यावरण में रूपांतरण करता गया। आधुनिक आर्थिक मानव ने पिछले 100 वर्षों में अपनी भौतिक, आर्थिक तथा सामाजिक जरूरतों की प्राप्ति हेतु प्रकृति प्रदत्त पदार्थों का अंधाधुंध शोषण और विनाश किया गया है जिससे स्थानीय पर्यावरण का संतुलन बिगड़ गया है । व्यक्ति निजी स्वार्थपूर्ति के लिए पर्यावरण को महत्व नहीं दे रहा है, जिसें कारण पर्यावरणीय असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गयी।

भारत के मध्यप्रदेश राज्य में स्थित चम्बल संभाग के अन्तर्गत भिण्ड, मुरैना, श्योपुर जिले आते हैं। यहां पर कुछ कृषि भूमि उपजाऊ है कुछ नहीं है। यहां चम्बल के कुछ शुष्क क्षेत्र बंजर हैं जहां जल की अत्यधिक कमी है। यहां के निवासी बहुत दूर से जल की व्यवस्था करते हैं। इतना सबकुछ होने के पश्चात् भी यहां के लोगों में पर्यावरण को संरक्षित रखने के प्रति जागरूकता का अभाव दृष्टिगोचर होता है।

पर्यावरण संरक्षण :

पर्यावरणीय व्यवस्था में परिवर्तन होना मानव मस्तिष्क की चिंतन शक्ति का प्रतिफल है आदि काल से पर्यावरण की जिस असीम व नैसर्गिक सौन्दर्य सर्जना का अवलोकन करके व्यक्ति सहानुभूति करता था आज उसके स्वरूप से स्वार्थ के वशीभूत होकर विकृत करने में लगा हुआ है। जहाँ तक पर्यावरण से सम्बद्ध पृथ्वी का सम्बन्ध है तो वह केवल ग्रह है और हमें भविष्य की चिन्ता छोड़कर वैज्ञानिक तकनीकी और अन्य साधनों की मदद से, आर्थिक विकास को केन्द्र मानते हुए, पृथ्वी के हर घटक पर अपना काबू करना चाहिए।

पर्यावरण को संरक्षित करने का कार्य हम सबका है। चूंकि शोध का क्षेत्र चंबल संभाग के जिले हैं जो अधिकांश ग्रामीण इलाके हैं। वहां पर्यावरण संरक्षण को लेकर जागरूकता तो है परंतु उसमें भी उनके स्तर पृथक हैं। ग्रामीण इलाकों की वजह से वहां वृक्षारोपण, फसल इत्यादि की समुचित देखरेख की जाती है। ग्रामीण जीवन तो पेड़दार छाया तथा नदियों के शुद्ध जल से ही निर्बाध गति से चलता है। चंबल संभाग के जिलों में मुख्यतः छात्र–छात्राओं पर शोध को किया गया है जिनमें यह देखा गया कि पर्यावरण जागरूकता एवं संरक्षण के प्रति उनकी अभिवृत्ति कैसी है? वे किस प्रकार पर्यावरण के प्रति जागरूक होकर उसे संरक्षित करने का प्रयास करते हैं।

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किशोरावस्था के होते हैं। अभी नये–नये रूपों में प्रकृति, समाज, देश को समझने की कोशिश करते हैं। उन्हें पर्यावरण के प्रति जागरूकता तभी आयेगी जब उनके परिवारों के सदस्य उन्हें इस ओर प्रेरित करें। चम्बल संभाग में शिक्षा का स्तर इतना उच्च नहीं है और न ही वहां का पारिवारिक वातावरण इतना उपयुक्त है कि उनके सदस्य बच्चों में ये गुण विकसित करें। लेकिन एक बात अवश्य है कि अध्ययन क्षेत्र अधिकांश भाग ग्रामीण है, वहां के लोग खेती करते हैं तो वे पर्यावरण के प्रति भी अच्छी समझ रखते होंगे। ऐसे लोग अपने बच्चों को खेती के विषय में, सिंचाई के विषय में तो अवगत कराते ही होंगे, साथ ही साथ उनके बगीचे भी होंगे जहां वे वृक्षारोपण करते हैं। ग्रामीणजन अपने खेतों में उगी सब्जियां एवं फलों का सेवन करते हैं जो रासायनिक पदार्थों से दूर एवं सुरक्षित होती हैं।

शोध उद्देश्य :

1. शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय 9 के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरणीय जागरूकता एवं संरक्षण का अध्ययन करना।
2. अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय 9 के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरणीय जागरूकता एवं संरक्षण का अध्ययन करना।

परिकल्पना :

शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय 9 के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरणीय जागरूकता एवं संरक्षण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिसीमन :

शोध केवल चम्बल संभाग के जिलों के विशेष संदर्भ में किया गया है।

न्यादर्श :

इस शोध कार्य हेतु चम्बल संभाग के 40 शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9वीं के 120 छात्र एवं 120 छात्रायें (कुल 240) तथा 40 अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9वीं के 120 छात्र एवं 120 छात्रायें (कुल 240) को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया है।

शोध में उपकरण :

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध में प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित पर्यावरण जागरूकता अभिक्षमता मापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय तकनीकी :

- मध्यमान
- प्रामाणिक विचलन
- टी–टेस्ट

निष्कर्ष :

परिकल्पना :

शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय 9 के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरणीय जागरूकता एवं संरक्षण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका

शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय 9 के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरणीय जागरूकता एवं संरक्षण का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी मान

विद्यार्थी	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	प्रामाणिकता स्तर	टी मान
शासकीय एवं अशासकीय कक्षा 9 के छात्र	35.77	3.58	478	0.01 2.59	3.70
शासकीय एवं अशासकीय कक्षा 9 की छात्राएं	34.65	3.03		0.05 1.97	

Degree of freedom (df) = (240-1)+(240-1) = 478

478 स्वतंत्रता अंश पर 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.59 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 1.97 होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान 3.70 इन दोनों मानों से अधिक है अतः सार्थक है। शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय 9 के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरणीय जागरूकता एवं संरक्षण में सार्थक अंतर है।

अर्थात् परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है।

विवेचना :

शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय 9 के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरणीय जागरूकता एवं संरक्षण में सार्थक अंतर पाया गया है क्योंकि कक्षा 9 के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता को लेकर भिन्नता पायी गई है। इसकी वजह यह है कि शासकीय विद्यालयों की अपेक्षा अशासकीय विद्यालयों में पर्यावरण जागरूकता एवं संरक्षण पर अत्यधिक ध्यान देकर विद्यार्थियों से वृक्षारोपण इत्यादि कार्यक्रम कराये जाते हैं जबकि शासकीय विद्यालयों में ये कार्यक्रम होते तो हैं परंतु अशासकीय विद्यालयों की अपेक्षा कम होते हैं। इसलिए अन्तर दृष्टिगोचर होता है।

भावी शोध हेतु सुझाव :

- सभी शिक्षकों को पर्यावरण सुधारने का कार्य की जिम्मेदारी दी जानी चाहिए, जिससे वह विद्यालय एवं समुदाय दोनों जगहों में अच्छा कार्य करके विद्यार्थियों के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत कर सके।
- पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने के लिए स्कूलों को योगश्रम का अध्ययन का विषय बनाया जा सकता है।
- पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने के लिए स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा किये गये प्रयासों को अध्ययन का विषय बनाया जा सकता है।
- विद्यार्थियों को वृक्षारोपण अवश्य करना चाहिए।
- स्कूली पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा एक विषय के रूप में प्रस्तुत किये जाने पर अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ सूची :

1. *अग्रवाल, पी.के. (1993), ''पर्यावरण एवं नदी प्रदूषण'' आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 1993।*
2. *बोहरा, वंदना (2007), ''रिसर्च मैथडोलौजी'' ओमेक्स पब्लिकेशन, अंसारी रोड, नई दिल्ली।*
3. *चौधरी, रेनू (2007),''पर्यावरण अध्ययन एवं शिक्षण'' ज्ञान भारती प्रकाशन न्यू कॉलोनी, जयपुर।*
4. *जैन, दीप्ती (2013), ''पर्यावरणीय शिक्षा, प्रकाशन, श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा प्रथम संस्करण।*
5. *मिश्रा, महेन्द्र कुमार (2007), ''पर्यावरण का अध्ययन एवं शिक्षण विधियाँ'' ज्ञान भारती प्रकाशन, जयपुर।*

****